पत्र और संवेदनशील मुद्दे : कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया

प्रतिभा शर्मा

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के उद्देश्य में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना है ही, लेकिन इसके साथ-साथ अन्य व्यापक उद्देश्य भी हैं। लेख में, इन उद्देश्यों को पाने लिए विद्यार्थियों के साथ पत्र लेखन पर काम करने के अनुभव-आधारित तरीक़े सुझाए गए हैं। ये तरीक़े विद्यार्थियों के लिए पत्र लेखन के परम्परागत ढाँचे से परे सोचने-विचारने के अवसर बनाते हैं। विद्यार्थी बड़े लेखकों के पत्र पढ़ते हैं, उनके विचार समझने की कोशिश करते हैं, और अपने पत्रों के लिए लीक से हटकर नए-नए विषय सोचते हैं। विद्यार्थी उनपर दिलचस्पी और ख़ुशी से लिखते हैं, परिवार और सखा-सहेलियों को भेजते हैं, और फिर अपनी कक्षा में सभी के बीच पढ़ते और उनपर बात करते हैं। वे अपने पत्रों में अपने आसपास घटने वाली घटनाओं व चिन्ताओं को भी शामिल करते हैं। -सं.

पृष्ठभूमि

भाषा का उद्देश्य बहुत व्यापक है जिसमें बच्चों द्वारा ज्ञान और आनन्द प्राप्ति, दोनों ही आवश्यक हैं। प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं में हम भाषाई उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न विधाओं का उपयोग करते हैं। इनमें कविता, कहानी, निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, पत्र लेखन, आदि सभी शामिल हैं। उच्च प्राथमिक कक्षाओं में इन सभी विधाओं पर काम करने का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि बच्चे समझ पाएँ कि साहित्य क्या है, और उसमें उनकी रुचि बन पाए। भाषा सीखने के अन्य उद्देश्य भी यहाँ साथ-साथ चलते हैं। मसलन, भाषा में विचारों को गढ़ना और सम्प्रेषित करना। विचार बनने की प्रक्रिया शुरू होने के बाद मानसिक उठा-पटक शुरू होती है, कई तर्क-वितर्क आपसे बतियाते हैं, और भावनाएँ भी पनपती हैं।

बच्चों में सोच-विचार का यह सिलसिला शुरू करने और जारी रखने का एक ज़रिया पत्र लेखन हो सकता है। मुझे लगता है कि भाषा शिक्षण का उद्देश्य सिर्फ़ लिखने-पढ़ने में पारंगत कर देना मात्र ही नहीं हो सकता। इससे आगे बढ़कर इसका उद्देश्य बच्चों का विषय की सीमा से इतर सोच-विचार करना और किसी मुद्दे पर उनके अन्तरतम को झकझोरना भी है, ताकि वे समाज, परिवेश से आगे बढ़ते हुए अपने देश से जुड़े मुद्दों की भी पड़ताल कर सकें। इसी समझ के साथ पिछले दिनों कक्षा 8 में 30 बच्चों के साथ पत्र लेखन विधा पर काम किया गया। इन 30 बच्चों में हर स्तर के बच्चे थे जिनकी समझ के स्तर, सोचने के नज़रिए, लेखन अभिव्यक्ति और लेखन शैली में बहुत अन्तर था। सबके साथ काम करने के लिए चर्चा, पठन, प्रतिपुष्टि, पुनःपठन और लेखन जैसी गतिविधियों को कक्षा में स्थान दिया गया।

आमतौर पर हम पत्र के प्रारूप, सम्बोधन, अभिवादन, पत्रों के प्रकार – औपचारिक, अनौपचारिक, शिकायती – आदि पर काम करा ही लेते हैं, लेकिन मेरे मन में विचार था कि हम

प्रारूप पर ज़ोर नहीं देंगे। बच्चे ख़ुद सोचें और अपनी तरह से और मन से अपनी बात लिखें।

पिछली कक्षाओं में किया गया काम

कक्षा 8 में किए जाने वाले काम की चर्चा से पहले मैं पिछली कक्षाओं में पत्र लेखन के सन्दर्भ में किए गए काम के बारे में भी संक्षेप में बताना चाहूँगी। पिछली कक्षाओं में हमने इस विधा पर काम करते हुए पत्रों के वितरण की प्रक्रिया को जान लिया था; जब बमोर (गाँव) के बच्चों ने शिक्षकों के नाम पत्र लिखकर पोस्ट किए थे। इसके प्रथम चरण में शिक्षकों ने ख़ुद आकर अपने पत्रों के बारे में असेम्बली में बताया। आगे ये प्रक्रिया न सिर्फ़ अपने स्कूल तक सीमित रही, बल्कि अज़ीम प्रेमजी स्कूल सिरोही (राजस्थान) व अज़ीम प्रेमजी स्कूल यादगीर (कर्नाटक) तक पत्र-व्यवहार के ज़रिए चलती रही। इस तरह की गतिविधि करते वक़्त मैं भी बच्चों के साथ शामिल होती और अपने बच्चों (यादगीर के) के लिए पत्र लिखने बैठती। इससे सारे बच्चे सजग होकर लिखने में व्यस्त हो जाते। फिर हम सब अपने-अपने पत्र पढ़कर कक्षा में सुनाते और कक्षा में डिस्प्ले बोर्ड पर लगाते। जब पत्र भेजने की बारी आई तो मेरा पत्र भी बच्चों के पत्रों के साथ भेजा गया। जब पत्रों का सिलसिला शुरू हो गया और उनका आदान-प्रदान होने लगा। पत्रों को असेम्बली में भी प्रस्तुत करवाया गया। जब बच्चों को पत्र मिलते तो अपने अनदेखे दोस्त को देखने-जानने की उत्सुकता उनके मन में होती। वे एक के बाद एक पत्र लिखते और अपने दोस्त की पसन्द-नापसन्द, मूवी, कार्टून, पसन्दीदा किताब, गाना, उसकी ख़ास बात, आदि सबकुछ जान लेना चाहते थे। वे उनसे मिलने के लिए पत्र के माध्यम से निमंत्रण भी भेजते।

इस सबके साथ ही बच्चे 'भगत सिंह के पत्र', 'पिता का पत्र पुत्री के नाम' और 'संसार पुस्तक है' शीर्षक वाले एनसीईआरटी के पाठ पढ़ चुके थे। विद्यार्थियों ने इस तरह के काम भी किए थे : दी गई किसी रचना को पढ़ना, उस रचना के परिप्रेक्ष्य को, लेखक के विचारों को समझना, और तब अपने अनुभवों एवं विचारों के साथ लेखक के विचारों से संगति / सहमति / असहमति को अभिव्यक्त करना। लेकिन अब कक्षा 8 में किए जाने वाले पत्र लेखन में उन्हें ख़ुद मुद्दे का चयन करना था और उसपर सोचकर अपने विचार लिखने थे।

कक्षा 8 में किया गया काम

एक बार फिर से हमने 'भगत सिंह के पत्र', 'पिता का पत्र पुत्री के नाम', हरिशंकर परसाई का 'मेरे जेबकतरे के नाम' पत्रों पर बातचीत की। ऐसे भी कुछ विद्यार्थी थे जो पहले की कक्षा में इनसे नहीं गुज़र पाए थे, उन सभी विद्यार्थियों ने पाठों को पढ़ा। अगला काम था– बातचीत।

कक्षा में प्रत्येक बच्चे के पास अपने अनुभव, नई बातें, कुछ शिकायतें और पढ़ी हुई कहानियों की अनोखी बातें थीं। पूर्व में पढ़े गए पत्रों की याद दिलाते हुए बातचीत शुरू की गई। मैंने उनसे बातचीत करते हुए कहा कि आपने पहले पत्र लिखे ही हैं। आप सभी पत्रों के प्रारूप से परिचित भी हैं। आज भी हम पत्र ही लिखेंगे, लेकिन उनके लिए शीर्षक और विचार आपके ही होंगे। बताइए, आप किन-किन शीर्षकों को लेकर पत्र लिखना चाहेंगे? इस तरह बातों-बातों में उनके पास रखी विचारों की पोटली खुलनी शुरू हुई। किसी बच्चे ने अपने दोस्त को पत्र लिखकर अपनी पसन्द के बारे में बताने को कहा तो किसी ने अपनी नापसन्द के बारे में लिखने को चुना। किसी बच्चे ने अपने दोस्त के बुरे बर्ताव (जो उसे ख़राब लगा था) पर टिप्पणी देने की बात कही; तो किसी ने अपनी ख़ास बात अपने दोस्त से साझा करने की बात रखी। इसी तरह, किसी बच्चे ने अपने नाना-नानी के घर छुट्टियाँ बिताने के अनुभव को साझा करना चाहा तो किसी ने बुख़ार होने पर स्कूल न आने को लेकर अपना अनुभव बताने की बात कही। चूँकि यहाँ सबने स्वेच्छा से कुछ लिखना तय किया था तो मुझे भी हल्का महसूस हुआ क्योंकि बिना दबाव के अब उनके पास अपना काम था, जिसे करने के लिए वे ख़ुद ही राज़ी हुए थे। सभी बच्चे अपने स्तर के अनुरूप लिख रहे थे (यहाँ स्तर से अभिप्राय बच्चों की विचारगत अभिव्यक्ति की गुणवत्ता एवं लेखन की शैलीगत विभिन्नता से है)। इस समय मैं कक्षा में घूमकर उन बच्चों की मदद कर रही थी, जिन्हें लिखने के लिए थोड़ा प्रेरित करना पड़ता था। उनमें आत्मविश्वास जगाने के लिए कुछ देर उनके साथ बैठकर काम शुरू कराने के बाद वे भी लिखने में लग गए। एक समूह ऐसा भी बनाया गया था, जिसमें परस्पर मदद से बच्चे पत्र की दिक़्क़तों को ख़ुद-ब-ख़ुद दूर कर रहे थे। यहाँ मेरा काम न के बराबर रह गया था क्योंकि उनके विचार पत्रों में आते जा रहे थे। कुछ बच्चों ने अनुभवों को पत्र द्वारा अभिव्यक्त करने की पहल की। मसलन, बचपन में जिए गए किसी पल या ख़ास घटना या आनन्द के अनुभव को लिखना; अपने स्कूल के पहले दिन का अनुभव अपनी मौसी या किसी दोस्त से साझा करना; अपने जन्मदिन पर मिले उपहार से मिली ख़ुशी को किसी रिश्तेदार या साथी को साझा करना; स्कूल की असेम्बली में पेश किए गए नाटक के अनुभव लिखना; अपनी किसी यात्रा के वर्णन को साझा करना; आदि। कुछ बच्चों ने बीच से पौधे बनने की प्रक्रिया पर लिखा तो कुछ ने गाँव में होने वाले सरपंच और वार्ड मेम्बर के चुनाव की चर्चा की। कुछ पत्रों के शीर्षक ऐसे भी थे, जिनमें दोस्त अपनी शिकायत पर जवाब में सफ़ाई देता है और एक बार माफ़ करने की गुज़ारिश करके आगे ऐसा न करने का वादा करता है।

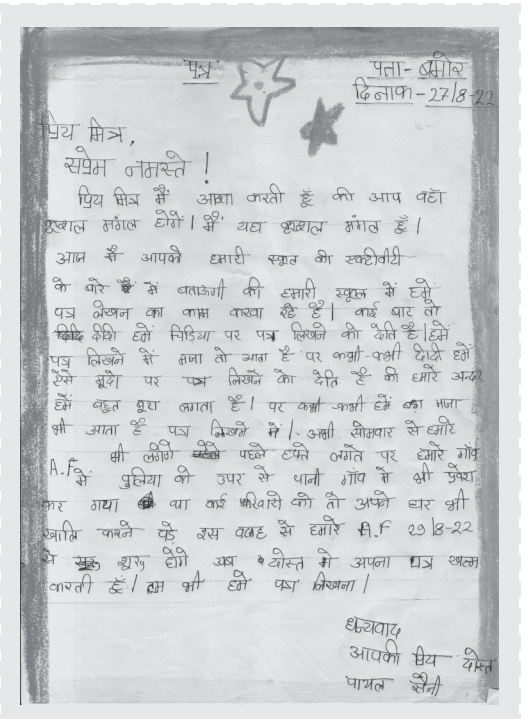

पत्र

पता- बमोर
दिनाक- 27/8-22

प्रिय मित्र,
सप्रेम नमस्ते !
प्रिय मित्र मैं आशा करती हूँ की आप वहा कुशल मंगल होंगे। मैं यहा कुशल मंगल हूँ।
आज मैं आपको हमारी स्कूल की एक्टीवीटी के बारे में बताऊगी की हमारी स्कूल में हमे पत्र लेखन का काम करवा रहे है। कई बार तो दीदी हमें चिड़िया पर पत्र लिखने को देति है। हमें पत्र लिखने में मजा तो आता है पर कभी-कभी दीदी हमें ऐसे मुदो पर पत्र लिखने को देति है की हमारे अन्दर हमें बहुत बुरा लगता है। पर कभी कभी हमें बड़ा मजा भी आता है पत्र लिखने में। अभी सोमवार से हमारे A.F भी लगेंगे पहले हफ्ते लगते पर हमारे गाँव मे पुलिया को उपर से पानी गाँव मे भी प्रवेश कर गया था कई परिवारो को तो अपने घर भी खालि करने पडे इस वजह से हमारे A.F 29/8-22 से शुरु होंगे अब दोस्त मे अपना पत्र खत्म करती हूँ। तुम भी हमे पत्र लिखना।

धन्यवाद
आपकी प्रिय दोस्त
पायल सैनी

अगला काम कुछ कार्यालयी पत्रों की जानकारी देना था, अतः शिकायती पत्रों और

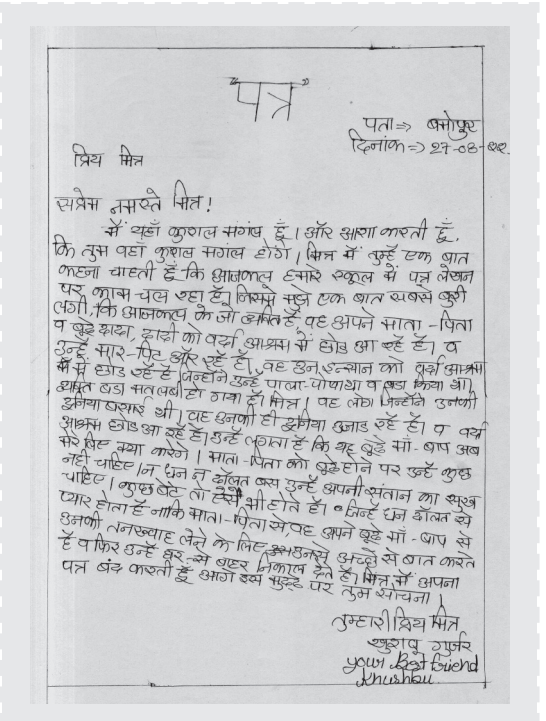

"पत्र"

पता => कमोपुर
दिनांक => 27-08-22

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्ते मित्र!

मैं यहाँ कुशल मंगल हूँ। और आशा करती हूँ, कि तुम वहाँ कुशल मंगल होगे। मित्र मैं तुम्हें एक बात कहना चाहती हूँ कि आजकल हमारे स्कूल में पत्र लेखन पर काम चल रहा है। जिसमे मुझे एक बात सबसे बुरी लगी, कि आजकल के जो व्यक्ति हैं, वह अपने माता-पिता व बूढ़े दादा, दादी को वृद्ध आश्रम में छोड़ आ रहे हैं। व उन्हें मार-पिट और रहे हैं। वह उन इन्सान को वृद्ध आश्रम में छोड़ रहे है जिन्होंने उन्हें पाला-पोषा था व बड़ा किया था। व्यक्ति बड़ा मतलबी हो गया है मित्र। वह लोग जिन्होंने उनकी दुनिया बसाई थी। वह उनकी ही दुनिया उजाड़ रहे हैं। व वृद्ध आश्रम छोड़ आ रहे हैं। उन्हें लगता है कि यह बूढ़े माँ-बाप अब मेरे लिए क्या करेंगे। माता-पिता को बूढ़े होने पर उन्हें कुछ नहीं चाहिए। न धन न दौलत बस उन्हें अपनी संतान का सुख चाहिए। कुछ बेटे तो ऐसे भी होते हैं। जिन्हें धन दौलत से प्यार होता है नाकि माता-पिता से, वह अपने बूढ़े माँ-बाप से उनकी तनख्वाह लेने के लिए उनसे अच्छे से बात करते हैं व फिर उन्हें घर से बाहर निकाल देते हैं। मित्र मैं अपना पत्र बंद करती हूँ आगे इस मुद्दे पर तुम सोचना।

तुम्हारी प्रिय मित्र
खुशबू गुर्जर
your Best friend
Khushbu

आवेदन पत्रों पर बात की गई। बच्चों से पूछा गया कि जब आप किसी कार्यालय, मसलन, प्रधानाचार्य, थाना प्रभारी, बैंक मैनेजर या किसी उच्च अधिकारी को पत्र लिखेंगे तो उन्हें अपने काम के बारे में कैसे बताएँगे? बातचीत में उभरे उनके जवाब, उनको ही समझाने का काम कर रहे थे। अब पत्रों के वर्गीकरण को समझाना आसान था। बच्चे स्वयं उदाहरणों के माध्यम से वर्गीकरण समझ रहे थे। चूँकि विषयवस्तु को बच्चों ने ख़ुद चुना था, इसलिए हर बच्चे के पास कहने को कुछ-न-कुछ था। अब पत्र लिखना उनके लिए आसान हो गया था और इस तरह से

अब बच्चे अपने मन का विषय चुनकर उसपर लिख रहे थे। वे कहीं कल्पना की उड़ान तय कर रहे थे तो कहीं अपनी यादों में डूबकर लिख रहे थे। कक्षा के कालांश का समय, समय-सारणी में 45 मिनट ही निश्चित है, अतः एक कक्षा में कुछ बच्चों के ही पत्र पूरे हो सके। जिनके पत्र अधूरे रह गए हैं; वे घर से लिखकर लाएँगे, यह तय हुआ।

अगले दिन की शुरुआत

अगले दिन के लिए मैंने तय किया था कि लगभग पाँच बच्चों के पत्र कक्षा में सुने जाएँगे। इस प्रक्रिया में हर स्तर के बच्चे की भागीदारी होगी। अगली कक्षा पत्र सुनने से ही शुरू हुई। इसमें पाँच बच्चों ने उत्साह से अपने पत्र सुनाए। बाक़ी बच्चे भी पत्र सुनाने को उत्सुक थे, पर ये कहकर विराम दिया गया कि आज की कक्षा में कुछ मुद्दे तय करके उनपर लिखना शुरू करते हैं। यहाँ से हमारी आज की कक्षा की बातचीत शुरू हुई।

मैंने कहा कि आपको अब अपने आसपास, समाज और देश के विषय में कुछ सोचना चाहिए। आपने अब तक अपने मित्रों, रिश्तेदारों के बारे में सोचा है और उनको पत्र लिखे हैं। पर क्या कुछ ऐसे मुद्दे भी हैं, जो हमारे समाज और देश

को प्रभावित करते हैं? बच्चों ने इनपर चर्चा की और तय किया कि वह समस्या है– दहेज प्रथा।

दरअसल उन दिनों बमोर में एक महिला की हत्या की ख़बर सामने आई थी। लड़के वाले, लड़की पक्ष से पैसों की माँग कर रहे थे और माँग पूरी न होने पर महिला की पिटाई की गई। इससे उसकी मौत हो गई। चूँकि मुद्दा संवेदनशील था, इसलिए हमने इसपर काफ़ी बात की। बातचीत से निकला कि जिनसे हमें दु:ख पहुँचता हो या हम सोचने पर मजबूर हो जाते हों, ऐसे मुद्दे संवेदनशील होते हैं। हालाँकि ये परिभाषा पर्याप्त नहीं है, परन्तु उन्होंने इसके आधार पर मुद्दे बताने शुरू किए। मैंने सारे मुद्दे ब्लैकबोर्ड पर दर्ज कर दिए। इनमें तरह-तरह के मुद्दे आए। यहाँ से संवेदनशील मुद्दों के सूचीकरण का काम शुरू किया गया। बच्चों ने चार्ट पेपर पर इन मुद्दों को दर्ज किया। जब सभी मुद्दों का सूचीकरण हो गया तो बच्चों ने इस चार्ट को कक्षा की दीवार पर चस्पा कर दिया। बच्चों द्वारा तय किए गए कुछ संवेदनशील मुद्दे नीचे लिखे हुए हैं :

अन्नपूर्णा डुंगरी बमोर
रोड वार्ड न. 56, टोंक
राजस्थान, 26/08/22

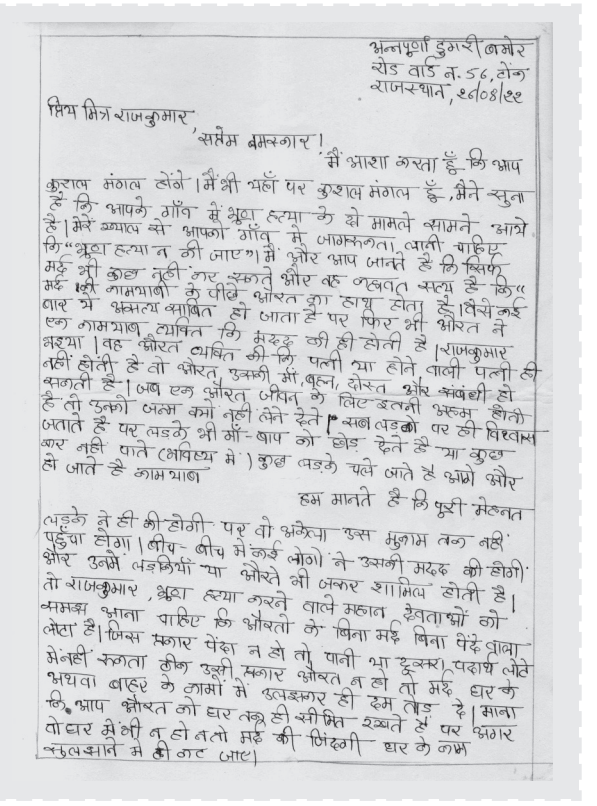

प्रिय मित्र राजकुमार,
'सप्रेम नमस्कार!'
मैं आशा करता हूँ कि आप कुशल मंगल होंगे। मैं भी यहाँ पर कुशल मंगल हूँ, मैंने सुना है कि आपके गाँव में भ्रूण हत्या के दो मामले सामने आये है। मेरे ख्याल से आपको गाँव मे जागरूकता लानी चाहिए कि "भ्रूण हत्या न की जाए"। मैं और आप जानते हैं कि सिर्फ मर्द भी कुछ नही कर सकते और वह कहावत सत्य है कि "मर्द की कामयाबी के पीछे औरत का हाथ होता है। वैसे कई बार ये असत्य साबित हो जाता है पर फिर भी औरत ने एक कामयाब व्यक्ति कि मदद की ही होती है। राजकुमार भइया। वह औरत व्यक्ति की कि पत्नी या होने वाली पत्नी ही नहीं होती है वो औरत, उसकी माँ, बहन, दोस्त और संबंधी हो सकती है। जब एक औरत जीवन के लिए इतनी अहम होती है तो उनको जन्म क्यों नही लेने देते। सब लड़को पर ही विश्वास जताते है पर लड़के भी माँ-बाप को छोड़ देते है या कुछ कर नहीं पाते (भविष्य मे) कुछ लड़के चले जाते है आगे और हो जाते है कामयाब
हम मानते है कि पूरी मेहनत लड़के ने ही की होगी पर वो अकेला उस मुकाम तक नही पहुँचा होगा। बीच-बीच मे कई लोगो ने उसकी मदद की होगी और उनमे लड़कियाँ या औरते भी जरूर शामिल होती है। तो राजकुमार, भ्रूण हत्या करने वाले महान देवताओं को समझ आना चाहिए कि औरतो के बिना मर्द बिना पेंदे वाला लोटा है। जिस प्रकार पेंदा न हो तो पानी या दूसरा पदार्थ लोटे मे नही रुकता ठीक उसी प्रकार औरत न हो तो मर्द घर के अथवा बाहर के कामों मे उलझकर ही दम तोड़ दे। माना कि आप औरत को घर तक ही सीमित रखते हैं पर अगर वो घर मे भी न हो न तो मर्द की जिंदगी घर के काम सुलझाने मे ही कट जाए।

- गाँव की एक महिला की घरेलू हिंसा की पीड़ा से थाना प्रभारी को अवगत कराना।
- भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम।
- बाल विवाह की ख़ामियाँ।
- रंगभेद, जातिवाद, असमानता, आदि।

- मटकी से पानी पीने पर बच्चे की पिटाई से मौत : दलित बच्चे के साथ हुआ भेदभाव।
- आवारा पशुओं और उनके द्वारा हो रही घटनाएँ तथा नगर परिषद का रवैया।
- निरन्तर हो रही वृक्षों की कटाई से चिड़ियों की परेशानी।
- पक्षियों को पिंजरे में बन्द किया जाना चाहिए या खुला छोड़ देना चाहिए?
- वृद्ध आश्रम में भेजे जाने वाले बुजुर्गों की पीड़ा।

हमने इन मुद्दों पर एक-एक कर बातचीत करनी शुरू की, ताकि हर बच्चा मुद्दे पर अपनी बात कहने और जागरूक रहकर कुछ लिखने को तैयार हो सके। पहले हम मुद्दे पर बात करते, फिर लिखने को देते और लिखे हुए को पढ़ते। कुछ पत्र वे ख़ुद पढ़कर सुनाते, कुछ पत्रों को मैं भी कक्षा में हाव-भाव के साथ पढ़ती। इस तरह की बातचीत और लेखन में हमने 5-6 कालांश बिताए। सबने लिखने की प्रक्रिया में भाग लिया। जिन बच्चों को लिखने में

समस्या थी, उनको ध्यान में रखकर एक मिला-जुला समूह बनाया, जिसमें हर स्तर के छात्र थे। इन बच्चों को कोई शब्द न लिखना आने पर समूह के अन्य साथी उनकी मदद करते थे। जब यह काम पूरा हो गया, तब हमने उनके पत्रों की फ़ोटोकॉपी को उनकी कक्षा में डिस्प्ले बोर्ड पर लगाया। उनके मूल पत्रों की एक किताब बनाकर पुस्तकालय में भी रखी। बच्चों द्वारा लिखे गए पत्रों को संकलित करके अन्य विद्यार्थियों के सीखने के लिए पुस्तक का रूप दिया गया, जो 'बच्चों के सन्दर्भ बच्चों के लिए' की तर्ज़ पर आगामी कक्षाओं के लिए उपयोगी साबित होगी। ये पत्र आज भी अतिरिक्त सन्दर्भ के रूप में दूसरी कक्षाओं के बच्चों के काम आते हैं।

हालाँकि, ऐसा कह पाना मुश्किल होगा कि इसपर काम पूरा हो गया, क्योंकि हर क्षेत्र में सीखने की गुंजाइश हमेशा रहती है। इस प्रक्रिया को विराम देना अभी पर्याप्त नहीं है क्योंकि ये अनवरत चलने वाली है। पत्र लिखना बच्चे सीख चुके हैं, ये कहा जा सकता है लेकिन संवेदनशील हो जाने का दावा पत्र लिखने-भर से पूरा होने वाला नहीं। विद्यार्थियों और मैंने निश्चित किया है कि इस तरह की जागरूकता की मुहिम को कक्षा में छेड़ते रहना बहुत ज़रूरी है।

डॉ प्रतिभा शर्मा शिक्षा के क्षेत्र में 15 वर्ष से काम कर रही हैं। उन्होंने मानस गंगा सीनियर सेकेंडरी स्कूल (बोध शिक्षा समिति कूकस) में 6 वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। प्रतिभा ने केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के जयपुर परिसर से संस्कृत भाषा में पीएचडी और बीएड की शिक्षा प्राप्त की। संस्कृत विषय पर लिखे उनके कई लेख संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। शिक्षा सम्बन्धी लेख 'टीचर्स ऑफ़ इंडिया' पोर्टल पर भी प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी स्कूल टोंक, राजस्थान में अध्यापन कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : pratibha.sharma@azimpremjifoundation.org